Nav Jyoti, Vol. 5, No. 10, January-June 2017 ISSN : 2249-7331

# भारतीय सांस्कृतिक परिवेश एवं वैश्वीकरण

डॉ0 सत्येन्द्र नारायण*

वैश्वीकरण एक जटिल एवं बहुआयामी विचारधारा है। जिसमें एक साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, तकनीकी व पर्यावरणीय प्रक्रियाएं सम्मिलित हैं। वैश्वीकरण आज विश्व में चारों ओर पैर पसार रहा है। आज मनुष्य की प्रवृत्ति निरन्तर व्यावसायिक होती जा रही है। धन कमाने की लालसा ने मुनष्य को मशीन बना दिया है। इस मशीनीकरण से एक उपभोक्तावादी संस्कृति का विकास हुआ है, जो उसे सामूहिक रूप से विश्व स्तर पर व्यापार करने की ओर अग्रसर करती है। जन संचार के आधुनिकतम साधनों ने वैश्वीकरण को एक सुदृढ़ आधार दिया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां इस अवसर का सबसे ज्यादा लाभ उठा रही हैं। 80 के दशक के शुरू में पश्चिमी विकसित देशों में भारी मन्दी का दौर चल रहा था । उससे निकलने के लिए तीसरी दुनियां के देशों ने बाजारों को खोलने की व्यापक योजना अमेरिकन राष्ट्रपति रीगन और ब्रिटेन की प्रधानमंत्री थैचर ने मिलकर बनायी । यह रीगन थैचर की नयी विश्व व्यवस्था का मॉडल ही वैश्वीकरण के रूप में दुनियां में फैलाया जा रहा है। देश केवल समझौते से ही इस मॉडल को अंगीकार न करें बल्कि कानूनी ढंग से इससे बंध जायें, इसके लिए गैट समझौते के आठवें चक्र को विकसित देशों ने अपने ढंग से चलाया और उसमें से विश्व व्यापार संगठन (W.T.O.) 1994 में बनाया जो अब कानूनी तौर से वैश्वीकरण को दुनिया पर लाद रहा है।

वैश्वीकरण ने भारतीय समाज एवं संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया है। भारतीय समाज स्थिर समाज है, उसके मानवीय सम्बन्धों में बहाव नहीं है, परिवार और रिश्ते नाते सीमेन्ट की भॉति मजबूत हैं। रिश्तों की भूमिकायें और उनके कर्तव्य पत्थर की लकीर जैसे हैं। जातियों की ऊॅच नीच न केवल समाज में है बल्कि वह घर में है। बड़े भाई और छोटे भाई, सास–बहू, पति–पत्नी, हर रिश्तों में अन्तर दिखलायी पड़ता है। कारखानों में नौकर और मालिक के बीच सम्बन्धों में काफी भिन्नता है। अतः स्पष्ट है कि भारतीय कुटुम्ब में भी भेद दृष्टि है, सामनता की दृष्टि नहीं । जिस समानता को राजनैतिक स्वतन्त्रता, आर्थिक विकास और सामाजिक समता को पश्चिमी समाजों ने पाया वह भारत की उपज नहीं है।

संस्कृति एक सामाजिक विरासत है और संचय से विकसित होती है। संस्कृति के द्वारा ही मनुष्य एवं समाज अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। किसी समाज एवं राष्ट्र की श्रेष्ठतम उपलब्धियां ही संस्कृति है। संस्कृति को समाज एवं सामाजिक सम्बन्धों की अधिष्ठात्री भी कहा गया है और समाज द्वारा निर्मित भी । दिनकर की दृष्टि में संस्कृति मनुष्य की आत्मा की चीज है, वह उसे भीतर से कोमल, दयालु और विनम्र बनाती है। संस्कृति विजय नहीं मैत्री है। और सबसे बढ़कर संस्कृति की चरम साधना अंहिसा में प्रकट होती है। संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान प्रदान से बढ़ती है, जो जाति केवल देना ही जानती है लेना कुछ नहीं उसका एक न एक दिन दिवाला निकल जाता है । इसके विपरीत जिस जलाशय के पानी लाने वाले दरवाजें बराबर खुले रहते हैं, उसकी संस्कृति कभी नहीं सूखती, उसमें सदा ही स्वच्छ जल लहराया करता है। जिस प्रकार नदियों के संगम के पूर्व की पृथक धारायें संगम के बाद निकलकर एक हो जाती है, ठीक उसी प्रकार संस्कृति भी अनेक सामाजिक धाराओं का समिश्रित प्रवाह है, अविछिन्न और स्वाभाविक भी भारतीय संस्कृति एक समिश्रित संस्कृति है, जो मेल–मिलाप से उपजी है अलगाव से नहीं।

वैश्विक स्तर पर सम्पूर्ण पृथ्वी एक तन्त्र है । हम प्रकृति के मालिक एवं नियन्त्रक नहीं हैं बल्कि इस अदभुत एवं रहस्यमय जगत के विवेकशील प्राणी हैं, लेकिन दुःख है कि हम स्वंय को प्रकृति का उपभोक्ता न मानकर नियंत्रक और स्वामी बन बैठे हैं । पर्यावरण प्रदूषण इसका सहज उदाहरण है। किसी प्राकृतिक संसाधन को ले लें जल हो या हवा इनका सबसे ज्यादा दुरूपयोग हुआ है, सदुपयोग कम । इनके दुरूपयोग पर नियंत्रण के लिए वैश्वीकरण बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुआ है। उसने हमें प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा के प्रति सचेत किया है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं के निर्णायक

* एसो0 प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत

तत्व रूढ़ियों, परम्पराओं, अन्धविश्वाशों आदि का खातमा तो हुआ है, लेकिन वृहद परम्परायें आज भी जीवन्त है जो हमारी बौद्धिक क्षमता वृद्धि की परिचायक हैं, जैसे गया में पिण्डदान की प्रक्रिया। योग–ध्यान आज सम्पूर्ण विश्व में फैला हुआ हैं। बाल–वृद्ध, अमीर–गरीब सभी इसे जानने सीखने के लिए उत्सुक हैं। मानवीय संवेदना युक्त जीवन पद्धति व्यक्ति और समाज को जोड़ती है, भौगोलिक सीमाएं तोड़ती है। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार आदि विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित होता है।

वैश्वीकरण के इस दौर में हम भारतीय संस्कृति की मूल विशेषताओं दया, करूणा, ममता, दान, सत्य–अहिंसा, मैत्री, विश्वास, त्याग, सहिष्णुता आदि मानवीय संवेदनाओं से परे हटकर पाश्चात्य सभ्यता इस प्रकार प्रभावित हो गये हैं कि इन मानवीय संवेदनाओं को भुला बैठे हैं। वैश्वीकरण ने व्यक्तिवादी संस्कृति का प्रसार किया है। हम जहां कहीं कुछ भी सोचते हैं वह अपने बारे में ही सोचते हैं।

इन तमाम समस्याओं के बावजूद आज हम प्रगति के जिस शिखर पर खड़े हैं। उसका श्रेय वैश्वीकरण को ही है। वैश्वीकरण से भोगवाद और स्थानीय राजनीति से पशुता को निकालकर न्याय एवं जनतन्त्र और मुक्ति के मूल्यों का विकास करना होगा। जहां विचारवान लोगों का समाज हो, जहां राष्ट्रभूमि का प्रत्येक निवासी अपनी धरती से परिचित हो उससे प्रेम हो भावात्मक संबंध जोड़े, उसके निवासियों में परस्पर भाई चारे का विकास और कौटुम्बिक सम्बन्धों का संर्वद्धन हो इसके लिए प्रत्येक नागरिक में सत्यनिष्ठा, विस्तृत यथार्थ बोध, दक्षता, तेज, त्याग और बलिदान ये आन्तरिक गुण हों।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ0 पु0ग0 सहस्त्रबद्धे : हिन्दू समाज–संगठन और विघटन 1987।
2. दिनकर–वट पीपल, रेती के फूल।
3. शास्त्री, कमलनाथ–संस्कृति के वातायन।
4. अथर्ववेद–पृथ्वी सूक्त ।
5. डॉ0 देवव्रत चौबे – वैश्वीकरण बनाम वसुधैव कुटुम्बकम 2005 नई दिशाएँ।
6. श्यामाचरण दूबे–परम्परा, इतिहास बोध और संस्कृति